CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

नैतिकता के संदर्भ में संत दादू दयाल के नैतिक विचारों की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता

डॉ. रोहिताश कुमार
प्राचार्य
श्री श्याम पी.जी. महाविद्यालय, गुढ़ा गौड़जी, झुंझुनूं
Email-rohitashmahla@gmail.com, Mobile-9983403798

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध सारांश

सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शुद्धता, सन्तोष, आत्म–संयम, आध्यात्मिक विवेक, आत्मानुशासन, सहिष्णुता, पवित्रता, क्षमा, दया, करूणा, साहस, परमार्थ, सादगी, विनयभाव, सहनशीलता, सेवा–भाव, सत्संगति, अद्वेष, निर्भय, मैत्री, कर्त्तव्य निष्ठा, उदारता आदि नैतिक विचार दादू द्वारा शामिल किये गये हैं।

भारतीय जीवन का एक आदर्श मूल्य अहिंसा है। अहिंसा के मूल्य के अनुरूप हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन को बल्कि सामाजिक, राजनैतिक, यहां तक कि अन्तर्राष्ट्रीय जीवन तक को ढ़ालने का प्रयत्न करते हैं। भारत का युद्ध से अपने को दूर रखने के प्रयत्न का प्रमुख कारण अहिंसात्मक मूल्य का राजनैतिक क्षेत्र पर प्रभाव है। हमें व्यक्तिवादी भावनाओं से दूर रहने की शिक्षा दी जाती है, क्योंकि भारत का सामाजिक मूल्य समष्टि के पक्ष में है।

मुख्य शब्द : *नैतिकता, संत एवं प्रासंगिकता।*

प्रस्तावना

ईमानदारी, त्याग, निष्ठा, उत्तरदायित्व की भावना, करूणा, दया आदि नैतिक मूल्य कहलाते हैं। देश, काल एवं अन्य परिस्थितियों में ये कभी–कभी विवादास्पद हो जाते हैं। वस्तुतः यह विवाद कभी–कभी दो प्रकार की इच्छाओं की टकराहट के कारण होता है जिसे मनोविश्लेषणवादी 'आंतरिक द्वन्द्व' की संज्ञा देते हैं। जॉन डीवी के शब्दों में ''जब कोई द्वन्द्व पैदा होता है तो वह अच्छा और तर्क के बीच होता है, जिनमें से एक है, जो एक लम्बी कार्य श्रृंखला के बाद यानी 'अन्ततोगत्वा' उपलब्ध होती है। यह संघर्ष विचार में प्रस्तुत दो वस्तुओं के बीच होता है, जिनमें से एक ऐसी इच्छा या तृष्णा के अनुरूप होती है, जो बिल्कुल अलग–अलग होती है और दूसरी एक ऐसी इच्छा के अनुरूप होती है जो अन्य इच्छाओं के साथ सम्बद्ध और सापेक्ष रूप में सोची जाती है। भय आदमी के मन में यह विचार पैदा करता है कि इच्छा को तुरन्त पूरा करना चाहिए, किन्तु और अधिक विचार करने पर मनुष्य के मन में यह विश्वास पैदा हो सकता है कि दृढ़ इच्छा और सच्चाई उसे और भी अधिक व्यापक तथा और भी अधिक श्रेय प्राप्त करा सकती है। इन दोनों ही अवस्थाओं में दो प्रकार का विचार काम कर रहा होता है। पहली अवस्था में विचार केवल व्यक्तिगत सुरक्षा का है ओर दूसरी में यह कहा जा सकता है कि विचार को प्रधानता और कितनी अहमियत देता है, यह जीवन के प्रति उसके अपने दृष्टिकोण, शिक्षा तथा संस्कारों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। नैतिक निर्णय में वस्तुतः हमें यह ध्यान रखना है कि विचार और सप्रयोजन इच्छा की खूब खुलकर काल्पनिक तृप्ति और सन्तुष्टि की जाए क्योंकि वे यह समझते हैं कि जब तक इच्छाएं केवल कल्पना लोक की सीमा के भीतर रहें और प्रत्यक्ष आचरण में न आएं तब तक उनमें कोई नुकसान नहीं पहुंचता है। किन्तु यह विचार इस तथ्य की उपेक्षा कर देता है कि ऐसी (कुत्सित) इच्छाओं की आनन्दमयी पूर्ति के विचारों के आगे आत्म–समर्पण कर देना उस इच्छा की तीव्रता को बढ़ाता है और उससे भविष्य में किसी समय उसे प्रत्यक्ष कार्य में परिणत करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। अतः ऐसे काल्पनिक आनन्द से विद्यार्थियों को बचने का प्रयास करना चाहिए एवं वास्तविकता एवं धार्मिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए ताकि कुत्सित इच्छाओं को दबाकर नई इच्छाओं का सृजन किया जा सके।

नैतिक शब्द का अर्थ है नीति सम्बन्धी। नीति का अर्थ है – ''व्यवहार की रीति जिससे अपना हित तथा दूसरों को कष्ट या हानि न पहुँचे, आचार पद्धति, समाज के लिए निश्चित आचार व्यवहार, अच्छा व्यवहार और चलन, लोक मर्यादा के अनुसार व्यवहार, राज्य तथा राष्ट्र हित तथा रक्षा के लिए निश्चित व्यवहार''।

बालक बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक समाज के नैतिक मूल्यों से परिचित होता रहता है। बालक में भौतिक मूल्यों के विकास के कारण ही विश्वास में दृढ़ता और समझ में प्रखरता आती जाती है। इन मूल्यों के कारण वह विरोधी वस्तुओं एवं विचारों से घृणा तथा आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो जाता है। एक बालक जो सत्य, ईमानदारी तथा आज्ञापालन का महत्व दैनिक जीवन में समझता है तो वह निश्चित ही इन भौतिक गुणों का सम्मान करेगा।

नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत अनेक मूल्य आते हैं, जैसे– सच्चरित्रता, सज्जनता, विवेक, नियम, व्रतपालन, आत्मनियंत्रण, सत्यवादिता आदि। व्यक्ति के इन्हीं नैतिक मूल्यों का योग चरित्र कहलाता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का नैतिक पक्ष है।

आधुनिक युग में एक ओर आदमी उपलब्धियों के बल पर चरम सीमा पर पहुंच गया है वहीं दूसरी ओर साम्प्रदायिकता का विष आदमी को मृतप्रायः कर रहा है। आज मानवता खण्ड–खण्ड होकर बंट गयी है। कहीं जाति के नाम पर, कहीं क्षेत्र के नाम पर, कहीं प्रान्त के नाम पर और कहीं सम्प्रदाय के नाम पर। जहाँ धर्म मनुष्य को जोड़ता है वहीं साम्प्रदायिकता मानवता को विभाजित करती है।

साम्प्रदायिक सापेक्ष दृष्टि जहर उगलती है, अमृत नहीं, साम्प्रदायिक सापेक्ष दृष्टि में घृणा और द्वेष की लपटें उठती है, प्रेम और सौहार्द की नहीं। साम्प्रदायिक सापेक्ष दृष्टि से लोगों में कटुता और हिंसा उत्पन्न होती है, मृदुता और अहिंसा नहीं। मन में यह प्रश्न उठता है कि आजादी के पश्चात् लगभग आधी शताब्दी में भी क्या दो समुदायों के बीच सौहार्द स्थापित है ?

दादू के नैतिक विचार

दादू माया बिहड़े देखतां, काया संग न जाइ।

कृत्रिम बिहड़े बावरे, अजरावर ल्यौ लाइ।।

दादू कहते हैं कि हे अज्ञानी! तेरा मायिक ऐश्वर्य देखते देखते ही तुझसे अलग हो जायेगा व नष्ट हो जायेगा। यह तेरा सुन्दर शरीर भी साथ नहीं जायेगा। जो भी माया कृत नकली ऐश्वर्य स्वर्गादि लोकों में है, वह भी सब सदा साथ नहीं रहता, नष्ट होने वाला ही है। अतः सदा साथ रहने वाले इन्द्रादि देवों से भी श्रेष्ठ परब्रह्मा में ही अपनी वृत्ति लगा।

स्वाद के कारणै लुब्धि लागी रहै, जिह्वा नापाक यों कीन्ह खाई।

भोग के कारणै भूख लागी रहै, अंग नापाक यों कीन्ह लाई।

दादू के अनुसार खाद्य के स्वाद के लिए लोभ ग्रसित वृति अखाद्य पदार्थो में लगी रहती है और उसे खाता है, तब जिह्वा अपवित्र हो जाती है। नारी प्रसंग के लिए अभिलाषा लगी रहती है, उसके शरीर को स्पर्श करता है, तब शरीर अपवित्र हो जाता है। उसकी भोगाशा कभी समाप्त नहीं होती।

जैसे अंध अज्ञान गृज, बंध्या मूरख स्वाद।

ऐसे दादू हम भये, जन्म गमाया बाद।

दादू कहना चाहते हैं कि जैसे मूर्ख भ्रमर कमल गंध की मस्ती से अंधा होकर वास–रस आस्वादन के लिए सूर्यास्त के समय कमल कोश में बंध जाता है, वैसे ही संसारी प्राणी अज्ञान वश घर के कार्यो में फंस कर अपना जन्म व्यर्थ ही खो देते हैं।

दादू स्वाद लाग संसार सब, देखत परलय जाइ।

इन्द्री स्वारथ साच तज, सबै बंधाणे आई।।

इन्द्रिय स्वार्थ वश सत्य परमात्मा का चिन्तन त्याग कर तथा शिश्नेन्द्रिय के स्वाद में लग कर प्रायः सभी संसार के प्राणी देखते–देखते परमार्थ से भ्रष्ट होकर विषय जाल में बंधते जा रहे हैं।

समस्या कथन

''नैतिकता के संदर्भ में संत दादू दयाल के नैतिक विचारों की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता''

अध्ययन के उद्देश्य

संत दादू दयाल के नैतिक विचारों की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में केवल समस्या से सम्बन्धित विचारों एवं सम्प्रत्ययों को दादू दयाल के काव्यग्रन्थों से संकलित किया जायेगा। इस अध्ययन में किसी भी प्रकार की सांख्यिकीय गणना विधि का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

शोधविधि

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय–वस्तु से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन दादू दयाल से सम्बन्धित संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से दार्शनिक, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में यह विधि सर्वथा उपयुक्त, तर्कसंगत एवं उत्तम मानी जाती है।

निष्कर्ष

दादू वाणी नैतिक गुणों का खजाना है। इन नैतिक गुणों को धारण करके व्यक्ति ख्याति को प्राप्त करता है। वर्तमान समय में मनुष्य स्वार्थी हो गया है तथा अपने स्वार्थ के लिए अपने चरित्र को दाव पर रख देता है जबकि आधुनिक समय की धारणा है कि खोई हुई सभी चीजें पुनः मिल सकती है परन्तु चरित्र का नाश हो जाने पर उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए मनुष्य को दादू के नैतिक विचारों का अनुसरण करते हुए अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।

नैतिक गुणों के द्वारा व्यक्ति परिवार, समाज एवं राष्ट्र का उत्थान करता है। इसी नैतिकता के कारण भारत को विश्वगुरू की पदवी प्रदान की गई है। वर्तमान में पथभ्रष्ट हुए युवाओं को उक्त मार्ग का अनुसरण करके राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए।

दादू के अनुसार नैतिक गुणों के कारण व्यक्ति विरोधी वस्तुओं एवं विचारों से घृणा तथा आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो जाता है। एक बालक जो सत्य, ईमानदारी तथा आज्ञापालन का महत्व दैनिक जीवन में समझता है तो वह निश्चित ही इन नैतिक गुणों का सम्मान करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

चतुर्वेदी, पं. परशुराम (संवत 2023), दादू दयाल ग्रन्थावली, ना0प्र0सभा, वाराणसी।

श्री दादू महाविद्यालय रजत जयन्ती ग्रन्थ : श्री दादू महाविद्यालय, मोती डूंगरी जयपुर सं0 2009।

श्री दादू चरित्र चित्रावलि : संपा0 स्वामी कनीराम दादू पंथी, प्रकाशन – श्रीरामसिंह श्रीचन्द दौलतराम गोयल श्री दादू नगरी भिवानी (हरियाणा) 1988 ई0।

श्री स्वामी दादू दयाल की वाणी : संपा0 पं0 चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी, वैदिक यन्त्रालय अजमेर, सं0 1964।

दादू दयाल : राम बक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2009 ई0।

सांख्य तत्व कौमुदी : संपा0 डॉ0 गजानन शास्त्री मूसलगॉवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2005 ई0।